an>

Title: Need to commence Government scheme in the name of Acharya Tulsi.

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): महोदय, आपने मुझे बोलने की अनुमति दी, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं शून्यकाल में आपके माध्यम से बहुत ही महत्वपूर्ण विषय उठा रहा हूं। आचार्य तुलसी तेरापंथ समाज के आचार्य थे और इनका जन्म शताब्दी वर्ष इस वर्ष मनाया जा रहा है। भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ाने तथा सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के मापदंड विकसित करने में आचार्य श्री तुलसी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आचार्य तुलसी ने 29 अप्रैल 1950 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात कर अणुव्रत के बारे में जानकारी दी थी। इसके बाद 19 दिसंबर 1974 को संसद भवन में आचार्य श्री तुलसी का सांसदों के समक्ष उद्बोधन भी हुआ था। जीवन में चरित्र निर्माण और नैतिकता के विकास के लिए आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत की स्थापना की थी। अणुव्रत छोटे-छोटे वृतों की वो शृंखला है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना नैतिक विकास कर सकता है। आचार्य तुलसी ने विधायिका में नैतिकता के विकास के लिए अपने स्तर पर अणुव्रत संसदीय मंच की भी स्थापना की थी जो वर्तमान में भी कार्यरत है। वर्ष 2013 में भारत सरकार ने इनके नाम से डाक टिकट भी जारी की है। मेरी आपके माध्यम से भारत सरकार से यह मांग है कि किसी महत्वपूर्ण संस्था या योजना का नाम आचार्य श्री तुलसी के नाम से किया जाए, जिससे नैतिकता के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था एवं महापुरुषों को एक प्रेरणा मिल सके। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी (भुवनेश्वर): मैं स्वयं को श्री अर्जुन राम मेघवाल जी द्वारा उठाए गए विषय से संबद्ध करता हूं।